01 अप्रैल 2024

शामिल विषय (TOPICS COVERED)

1. **ईस्टर (GS PAPER I: ए एंड सी)**
2. **Katchatheevu (GS PAPER I: भूगोल, GS PAPER II: आईआर)**
3. **केरल के कैप्टिव जंबोज़ की जेनेटिक प्रोफाइलिंग जल्द ही शुरू होगी (GS PAPER III: एस एंड टी)**
4. **गंभीर सूखे के कारण इडुक्की में इलायची की फसलें मुरझाने लगीं (GS PAPER III: आपदा प्रबंधन)**
5. **भारत भर के रिकॉर्ड 60 पारंपरिक उत्पादों को जीआई टैग दिया गया (GS PAPER III: एस एंड टी)**
6. **भारत की एचआईवी/एड्स प्रतिक्रिया का एआरटी (GS PAPER II: स्वास्थ्य क्षेत्र, सरकारी योजना)**
7. **जटिल संकट: ग्रीष्मकाल में जल संकट के प्रभाव पर (GS PAPER III: आपदा प्रबंधन)**
8. **श्रमिक, तकनीकी नहीं, राज्य की प्राथमिकता होनी चाहिए (GS PAPER II: सरकारी योजना (GS PAPER III: एस एंड टी का उपयोग)**

PatriotICAS

ईस्टर (GS PAPER I: ए एंड सी)

- क्रूस पर चढ़ने के बाद यीशु मसीह के पुनरुत्थान की याद दिलाना ।
- ईसाइयों का मानना है कि यीशु का पुनरुत्थान बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है, और विश्वास रखने वालों को शाश्वत जीवन का वादा प्रदान करता है।
- **चल पर्व**: ईस्टर की तारीख हर साल बदलती रहती है। यह हमेशा **22 मार्च और 25 अप्रैल के बीच रविवार को पड़ता है, जो हिब्रू कैलेंडर के समान चंद्र-सौर कैलेंडर पर आधारित गणना द्वारा निर्धारित होता है।**

ईस्टर सप्ताह (पवित्र सप्ताह):

- पवित्र सप्ताह शुरू होता है और यरूशलेम में यीशु के विजयी प्रवेश का प्रतीक है।
- **पुण्य गुरुवार**: अंतिम भोज का स्मरणोत्सव, अंतिम भोजन जो यीशु ने अपने क्रूस पर चढ़ने से पहले अपने शिष्यों के साथ साझा किया था।
- **गुड फ्राइडे**: यीशु के सूली पर चढ़ने और मृत्यु के दिन को चिह्नित करता है।
- **ईस्टर रविवार**: यीशु के पुनरुत्थान का जश्न मनाता है।

ईस्टर परंपराएँ और प्रतीक:

- **सूर्योदय सेवाएं:** कई चर्च भोर में विशेष सेवाएं आयोजित करते हैं, जो ईस्टर की सुबह खोजी गई खाली कब्र का प्रतीक है।
- **ईस्टर अंडे:** सजाए गए अंडे नए जीवन और पुनर्जन्म का प्रतीक हैं। इस परंपरा की जड़ें संभवतः ईसाई प्रतीकवाद और पूर्व-ईसाई वसंत ऋतु रीति-रिवाजों दोनों में हैं।
- **पास्का मोमबत्ती:** एक बड़ी, सजी हुई मोमबत्ती ईसा मसीह के प्रकाश का प्रतिनिधित्व करती है।
- **ईस्टर लिली:** पवित्रता और आशा का प्रतीक सफेद लिली, अक्सर ईस्टर के दौरान चर्चों को सजाती हैं।

कच्चातीवू को श्रीलंका को दे दिया : प्रधानमंत्री

Katchatheevu (GS PAPER I: भूगोल, GS PAPER II: आईआर)

- **छोटा निर्जन द्वीप:** कच्चाथीवु भारत और श्रीलंका के बीच पाक जलडमरूमध्य में स्थित एक छोटा द्वीप (लगभग 285 एकड़) है।
- **विवादित क्षेत्र:** ऐतिहासिक रूप से, कच्चाथीवू भारत और श्रीलंका के बीच एक विवादित क्षेत्र था, दोनों पक्ष द्वीप के चारों ओर मछली पकड़ने के अधिकार का दावा करते थे।
- **भारत-श्रीलंका समझौते:** 1974 में, भारत ने एक समुद्री सीमा समझौते के तहत कच्चातिवु को श्रीलंका को सौंप दिया। 1976 में एक बाद के समझौते ने समुद्री सीमा को और अधिक परिष्कृत किया।

वर्तमान स्थिति

- **श्रीलंकाई संप्रभुता:** कच्चाथीवू वर्तमान में श्रीलंका के नियंत्रण में है।
- **भारतीय मछुआरों के लिए मछली पकड़ने का अधिकार:** अपनी संप्रभुता के बावजूद, श्रीलंका ऐतिहासिक प्रथाओं का सम्मान करते हुए कच्चाथीवु के आसपास के पानी में भारतीय मछुआरों को पारंपरिक मछली पकड़ने की अनुमति देता है। हालाँकि, भारतीय मछुआरों द्वारा मशीनीकृत ट्रॉलर का उपयोग तनाव और चल रही बातचीत का एक स्रोत है।
- **सेंट एंथोनी चर्च:** इस द्वीप में सेंट एंथोनी चर्च है, जो भारतीय और श्रीलंकाई कैथोलिकों दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। वार्षिक सेंट एंथोनी उत्सव में दोनों देशों के लोग शामिल होते हैं।

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इंदिरा गांधी की सरकार के दौरान 1974 में कच्चाथीवू द्वीप श्रीलंका को सौंपने के लिए कांग्रेस की आलोचना की।

PatriotIAS

- मोदी ने एक समाचार रिपोर्ट का हवाला दिया और सोशल मीडिया पर पोस्ट कर इस रहस्योद्घाटन को "आंखें खोलने वाला और चौंकाने वाला" बताया।
- उन्होंने कांग्रेस पर 75 वर्षों तक भारत की एकता, अखंडता और हितों को कमजोर करने का आरोप लगाया.
- समाचार रिपोर्ट भाजपा तमिलनाडु प्रमुख के. अन्नामलाई द्वारा दायर सूचना के अधिकार (आरटीआई) के तहत प्राप्त जवाबों पर आधारित थी।
- आरटीआई जवाब ने द्वीप पर परस्पर विरोधी दावों को उजागर किया, जिसमें श्रीलंका ने आजादी के तुरंत बाद अपने दावों को दबाया।
- प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के समय में भी, विपक्ष ने इस क्षेत्र को सौंपने के इच्छुक होने के लिए भारत सरकार पर सवाल उठाया था।
- इंदिरा गांधी ने 1974 में तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि को कच्चाथीवु द्वीप श्रीलंका को सौंपने के फैसले के बारे में सूचित किया।
- तमिलनाडु में कांग्रेस और डीएमके गठबंधन में हैं.
- तमिलनाडु भाजपा का लक्ष्य मछुआरों की समस्याओं को स्थायी रूप से हल करने के लिए श्रीलंका से कच्चातिवू को पुनः प्राप्त करना है।
- द्वीप को पुनः प्राप्त करने की मांग लगभग एक साल पहले विदेश मंत्री एस जयशंकर को सौंपी गई थी।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले साल अगस्त में अविश्वास प्रस्ताव पर बहस के दौरान कच्चाथीवु द्वीप का मुद्दा उठाया था।
- मोदी ने उन परिस्थितियों के बारे में विभिन्न मुद्दों पर उनकी सरकार की आलोचना करने वालों से सवाल करने के महत्व पर जोर दिया, जिनके तहत कच्चातिवू को सत्ता सौंपी गई थी।
- रविवार को प्रधान मंत्री की टिप्पणी ने भारत के संप्रभु दावों और उनके चुनावी कथन के संबंध में कांग्रेस पर उनके हमले को उजागर किया।

केरल के कैप्टिव जंबोज़ की जेनेटिक प्रोफाइलिंग जल्द ही शुरू होगी (GS PAPER III: एस एंड टी)

- केरल में लगभग 400 बंदी हाथियों की आनुवंशिक प्रोफाइलिंग जल्द ही शुरू होगी।
- भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यूआईआई) राष्ट्रीय डेटाबेस में हाथियों के विवरण को शामिल करने के लिए प्रोफाइलिंग कर रहा है।
- नमूना संग्रह के लिए WII द्वारा केरल वन विभाग को फोरेंसिक किट प्रदान की गई हैं।
- जिलों में सहायक संरक्षकों (सामाजिक वानिकी) को अपने क्षेत्रों में हाथियों के खून और गोबर के नमूने एकत्र करने का काम सौंपा गया है।
- नमूना संग्रह और रिपोर्ट अद्यतनीकरण के संबंध में वन अधिकारियों के लिए 5 और 6 अप्रैल को एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम निर्धारित है।
- अप्रैल के दूसरे सप्ताह में सैंपल कलेक्शन शुरू होने की उम्मीद है।
- **यह केरल के मंदिर उत्सव के मौसम के चरम के साथ मेल खाता है जब बंदी हाथियों को परेड के लिए विभिन्न मंदिरों में ले जाया जाता है।**
- **केरल में हर साल लगभग 25 हाथियों की मौत होती है, जिसके कारण बंदी हाथियों की संख्या घटकर 407 रह गई है, जो कि सबसे बड़ी बंदी हाथी आबादी थी।**
- जबकि कुछ राज्यों में बंदी हाथी की प्रोफाइलिंग पूरी हो चुकी है, केरल की पहल चल रही है।

PathOnIAS

- देश में कुल मिलाकर अनुमानित 3,000 बंदी हाथी हैं।

गंभीर सूखे के कारण इडुक्की में इलायची की फसलें मुरझाने लगीं (GS PAPER III: आपदा प्रबंधन)

- इलायची **उत्पादक केंद्र लगातार सूखे का सामना कर रहे हैं,** जो इलायची किसानों के लिए चिंताजनक है।
- इडुक्की में इलायची क्षेत्र के लिए हाल के इतिहास में सूखे की यह स्थिति अभूतपूर्व है।
- गंभीर सूखे के कारण वंदनमेडु , पथुमुरी , संथनपारा , नेदुमकंदम , कट्टप्पना , अनाविलासोम और चक्कुपल्लम सहित विभिन्न क्षेत्रों में इलायची के बागानों को काफी नुकसान होने की सूचना मिली है।
- कट्टप्पाना के पास शाजी जैसे किसानों को डर है कि अगर सूखा अगले दो सप्ताह तक जारी रहा, तो उनके अधिकांश इलायची के पौधे नष्ट हो सकते हैं।
- कई किसान गर्मियों में बारिश की उम्मीद में सिंचाई पर निर्भर रहे हैं, लेकिन संग्रहित पानी खत्म हो रहा है और बारिश अभी तक नहीं हुई है।
- कुमिली के एक किसान, थॉमस मथाई, 1982 **में इसी तरह के सूखे को याद करते हैं जब गर्मियों की बारिश केवल 17 अप्रैल को हुई थी, जिसके परिणामस्वरूप कई किसानों के इलायची के पौधे नष्ट हो गए थे।**
- वंदनमेडु इलायची उत्पादक संघ के महासचिव शाइन वर्गीस चिंता व्यक्त करते हैं कि बढ़ती गर्मी आने वाले वर्ष में इलायची उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव डालेगी।

भारत भर के रिकॉर्ड 60 पारंपरिक उत्पादों को जीआई टैग दिया गया (GS PAPER III: एस एंड टी)

- भारत के विभिन्न क्षेत्रों के 60 से अधिक उत्पादों को भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग प्रदान किया गया है।
- यह पहला मामला है जब एक साथ इतनी बड़ी संख्या में उत्पादों को जीआई टैग मिला है।
- **अधिक राज्य अपने पारंपरिक उत्पादों के लिए जीआई टैग के लिए सक्रिय रूप से आवेदन कर रहे हैं, जो स्वदेशी विरासत की रक्षा में बढ़ती रुचि का संकेत देता है।**
- **असम ने छह पारंपरिक शिल्पों के लिए जीआई टैग हासिल किया** अशारीकांडी टेराकोटा शिल्प, पानी सहित मेटेका शिल्प, सारथेबारी धातु शिल्प, जापी (बांस की टोपी), मिशिंग हथकरघा उत्पाद, और बिहू ढोल ।
- असम के तेरह अन्य उत्पादों को भी जीआई टैग प्राप्त हुआ, जिनमें बोडो दोखोना (पारंपरिक पोशाक), बोडो एरी रेशम (शांति का कपड़ा), बोडो ज्वमगरा (पारंपरिक स्कार्फ), बोडो गमसा (पुरुषों के लिए पारंपरिक पोशाक), बोडो थोरखा (एक संगीत वाद्ययंत्र) शामिल हैं।), और बोडो सिफंग (एक लंबी बांसुरी)।
- असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने असम की विरासत पर गर्व व्यक्त किया और इन उत्पादों के महत्व पर प्रकाश डाला, जो सीधे तौर पर लगभग एक लाख लोगों का समर्थन करते हैं।

अशरिकांडी टेराकोटा शिल्प:	पानी मेटेका शिल्प:	सारथेबारी धातु शिल्प:

विवरण: विशिष्ट टेराकोटा मिट्टी के बर्तन, अक्सर अद्वितीय जानवरों की आकृतियों, पट्टिकाओं और लोक रूपांकनों वाली टाइलों के साथ।

विवरण: चावल के पेस्ट के साथ मिश्रित विशेष मिट्टी से बनी सजावटी आकृतियाँ। जटिल विवरण और जीवंत रंगों पर ध्यान दें ।

ज़ोराई " (एक स्टैंड के साथ ट्रे) और "बोटा" (एक प्रकार का कटोरा) देखें ।

बोडो थोरखा (संगीत वाद्ययंत्र):
विवरण: छोटा, बेलनाकार बांस का वाद्ययंत्र, एक छोटी बांसुरी की तरह, लंबवत रूप से बजाया जाने वाला।

मिशिंग हथकरघा उत्पाद:
विवरण: ज्यामितीय पैटर्न और प्रकृति रूपांकनों के साथ जीवंत वस्त्र।

बोडो ज्वमग्रा (पारंपरिक स्कार्फ):
विवरण: रंगीन पैटर्न वाला आयताकार स्कार्फ, अक्सर दोखोना के साथ उपयोग किया जाता है।

बिहू ढोल :
विवरण: लकड़ी और बकरी की खाल से बना दो तरफा, बेलनाकार ड्रम, जिसे बिहू उत्सव के दौरान बजाया जाता है।

बोडो एरी सिल्क (शांति का कपड़ा):
विवरण: चिकने शहतूत रेशम की तुलना में गर्म, बनावट वाला रेशम। शॉल, स्टोल और कपड़े की लंबाई देखें।

जापी (बांस की टोपी):
विवरण: सुंदर पैटर्न वाली प्रतिष्ठित शंकाकार टोपी। आपको रोजमर्रा और सजावटी संस्करण मिलेंगे ।

- **बनारस ठंडाई** , दूध को मेवे, बीज और मसालों के मिश्रण से बनाया गया एक पारंपरिक पेय है, जिसे भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग प्राप्त हुआ।
- गौदौलिया चौक, लहुराबीर और पक्का महल जैसे क्षेत्रों में स्थित पारंपरिक दुकानों में बेचा जाता है , जो विशेष रूप से महाशिवरात्रि , रंगभरी जैसे त्योहारों के दौरान बड़ी भीड़ को आकर्षित करता है। एकादशी , और होली.
- बनारस ठंडाई की शुरुआत सदियों पहले भगवान श्री काशी विश्वनाथ को प्रसाद के रूप में की गई थी।
- बनारस क्षेत्र के अन्य उत्पाद जिन्हें जीआई टैग प्राप्त हुआ उनमें बनारस तबला , बनारस शहनाई, बनारस लाल भरवामिर्च और बनारस लाल पेड़ा शामिल हैं।

बनारस तबला

- **विवरण:** हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत परंपराओं का केंद्र हाथ ड्रम की एक जोड़ी। बनारस उच्च गुणवत्ता वाले तबले तैयार करने का एक प्रसिद्ध केंद्र है जो अपनी तानवाला गुणवत्ता के लिए जाना जाता है।

बनारस की शहनाई

- **विवरण:** एक डबल-रीड वुडविंड वाद्य यंत्र, जो भारतीय शादियों और शुभ अवसरों के लिए आवश्यक है। बनारस की शहनाइयां अपनी शिल्प कौशल और गूंजती ध्वनि के लिए बेशकीमती हैं।

बनारस लाल भरवामिर्च

- **विवरण:** लाल मिर्च की एक विशिष्ट किस्म की खेती बनारस (वाराणसी) क्षेत्र में की जाती है। यह अपनी मध्यम गर्मी, जीवंत लाल रंग और अद्वितीय स्वाद प्रोफ़ाइल के लिए जाना जाता है।

बनारस लाल पेड़ा

- **विवरण:** खोया (वाष्पीकृत दूध) और चीनी से बनी एक लोकप्रिय भारतीय मिठाई। बनारस लाल पेड़ा अपने लाल-भूरे रंग , मुलायम बनावट और थोड़े दानेदार बनावट के लिए प्रसिद्ध है।

Patriotic

- त्रिपुरा ने दो जीआई टैग हासिल किए: एक पचरा-रिगनाई के लिए , जो विशेष अवसरों पर पहनी जाने वाली एक पारंपरिक पोशाक है, और दूसरा माताबारी पेड़ा, एक मीठी तैयारी के लिए।

- लिरनाई पॉटरी और चुबिची सहित कई उत्पादों के लिए जीआई टैग भी हासिल किया , जो सभी क्षेत्र में सामाजिक-सांस्कृतिक और धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़े हुए हैं।

भारत की एचआईवी/एड्स प्रतिक्रिया का एआरटी (GS PAPER II: स्वास्थ्य क्षेत्र, सरकारी योजना)

भारत में अग्रणी मुफ्त एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (एआरटी) पहल शुरू हुए 20 साल हो गए हैं, और इसमें अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए सबक हैं।

- को , **भारत सरकार ने निःशुल्क एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (एआरटी) शुरू की।** एचआईवी (पीएलएचआईवी) से पीड़ित व्यक्तियों के लिए, जो भारत में एचआईवी/एड्स महामारी की प्रतिक्रिया में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।
- इस निर्णय ने **एचआईवी पॉजिटिव व्यक्तियों के लिए एंटीरेट्रोवायरल दवाओं तक मुफ्त पहुंच प्रदान की** , जो एचआईवी/एड्स के खिलाफ लड़ाई में एक सफल और महत्वपूर्ण हस्तक्षेप साबित हुआ।
- शुरुआत में **एचआईवी/एड्स को मौत की सज़ा माना जाता था** और इसके साथ व्यापक भय, कलंक और भेदभाव भी था।
- **पहली एंटीरेट्रोवायरल दवा, एजेडटी (ज़िडोवुडिन) को मार्च 1987 में अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (यूएस एफडीए) द्वारा अनुमोदित किया गया था** , इसके बाद 1988 में तीन और दवाओं को मंजूरी दी गई और 1995 में प्रोटीज़ इनहिबिटर की शुरूआत की गई।
- इन चिकित्सा प्रगति के बावजूद, दुनिया की अधिकांश आबादी के लिए एचआईवी/एड्स उपचार तक पहुंच सीमित रही, विशेष रूप से निम्न और मध्यम आय वाले देशों में।

एआरटी को मुक्त करने का विकास

- 2000 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा के सहस्राब्दी शिखर सम्मेलन में , विश्व नेताओं ने एचआईवी/एड्स के प्रसार को रोकने और उलटने का लक्ष्य स्थापित किया।
- एचआईवी की रोकथाम, उपचार, देखभाल और सहायता सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच की वकालत करने के लिए 2002 में एड्स, तपेदिक और मलेरिया से लड़ने के लिए वैश्विक कोष की स्थापना की गई थी ।
- 2004 में, भारत में एचआईवी (पीएलएचआईवी) से पीड़ित 5.1 मिलियन व्यक्तियों का अनुमान लगाया गया था, जिनकी जनसंख्या का प्रसार 0.4% था। हालाँकि, बहुत कम लोग एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (एआरटी) प्राप्त कर रहे थे।
- उच्च उपचार लागत और उपचार तक सीमित भौगोलिक पहुंच के कारण 2004 के अंत तक केवल 7,000 पीएलएचआईवी एआरटी पर थे ।
- HAART (अत्यधिक सक्रिय एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी) के रूप में जानी जाने वाली संयोजन चिकित्सा 1996 में उपलब्ध हो गई, लेकिन इसकी लागत अत्यधिक $10,000 प्रति वर्ष थी ।
- पीएलएचआईवी को कलंक का सामना करना पड़ा , और एआरटी की अनुपलब्धता और अप्राप्यता के कारण कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी , जिससे स्वास्थ्य सेवा प्रदाता असहाय महसूस कर रहे थे।
- एक अभूतपूर्व निर्णय के तहत एचआईवी से पीड़ित किसी भी वयस्क के लिए मुफ्त एआरटी (एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी) उपलब्ध कराई गई।
- नवंबर 2006 से, बच्चों के लिए भी निःशुल्क एआरटी का विस्तार किया गया।

Patriot IAS

- दो दशकों में, एआरटी केंद्रों की संख्या 10 से भी कम से बढ़कर लगभग 700 हो गई, जिसमें 1,264 लिंक एआरटी केंद्र लगभग 1.8 मिलियन पीएलएचआईवी को मुफ्त एआरटी दवाएं प्रदान करते हैं।
- एआरटी का लक्ष्य न केवल पीएलएचआईवी के लिए उपचार शुरू करना है, बल्कि वायरल लोड को दबाना, रोग संचरण को रोकना भी है।
- 2023 तक, 15-49 वर्ष के बच्चों में एचआईवी का प्रसार घटकर 0.20% हो गया, अनुमानित 24 मिलियन पीएलएचआईवी के साथ, भारत की वैश्विक हिस्सेदारी दो दशक पहले के लगभग 10% से घटकर 6.3% हो गई ।
- 2023 तक, अनुमानित 82% पीएलएचआईवी को अपनी एचआईवी स्थिति पता थी, 72% एआरटी पर थे, और 68% वायरल रूप से दबे हुए थे ।
- वार्षिक नए एचआईवी संक्रमण में 48% की गिरावट आई है, जो वैश्विक औसत 31% से अधिक है, जबकि एड्स से संबंधित मृत्यु दर में 82% की गिरावट आई है, जो 2010 के बाद से 47% के वैश्विक औसत से अधिक है ।
- भारत में सरकार द्वारा संचालित अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के सामने आने वाली चुनौतियों को देखते हुए ये उपलब्धियाँ उल्लेखनीय हैं।

सेवाओं के प्रति रोगी-केंद्रित दृष्टिकोण

- नि:शुल्क एआरटी ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई , लेकिन अन्य पहलों ने एचआईवी महामारी को रोकने में इसकी सफलता को पूरक बनाया।
- पूरक पहलों में मुफ्त नैदानिक सुविधाएं प्रदान करना, माता-पिता से बच्चे में एचआईवी के संचरण को रोकने (पीपीटीसीटी) सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करना और तपेदिक (टीबी) और सह-संक्रमण जैसे अवसरवादी संक्रमणों का प्रबंधन करना शामिल है।
- कार्यक्रम ने लचीलेपन का प्रदर्शन किया और समय के साथ एआरटी पात्रता मानदंड में बदलाव के साथ अनुकूलित किया गया: 200 सेल्स/मिमी3 से कम सीडी4 से (2004 में) 500 सेल्स/मिमी3 से कम (2016 में), और अंत में 'ट्रीट ऑल' दृष्टिकोण तक। 2017 से, सीडी4 गिनती की परवाह किए बिना एआरटी शुरू करना ।
- 'सभी का इलाज करें' दृष्टिकोण ने व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों स्तरों पर वायरस संचरण को कम कर दिया, उपचार पर सभी पीएलएचआईवी के लिए मुफ्त वायरल लोड परीक्षण द्वारा पूरक किया गया।
- एक रोगी-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया गया, जिससे स्थिर पीएलएचआईवी को दो से तीन महीने की दवाएँ प्रदान की गईं, जिससे रोगी के दौरे, यात्रा के समय और लागत में कमी आई।
- इस दृष्टिकोण से उपचार के पालन में वृद्धि हुई और एआरटी केंद्रों पर भीड़ कम हुई , जिससे स्वास्थ्य कर्मियों को अन्य रोगियों के लिए अधिक समय मिल सका।
- भारत ने 2020 में कार्यक्रम में लगातार नई और अधिक शक्तिशाली दवाओं को जोड़ा , जैसे डोलटेग्रेविर (डीटीजी) ।
- 2021 में, भारत ने तेजी से एआरटी दीक्षा लागू की , एचआईवी निदान के सात दिनों के भीतर एआरटी शुरू किया, और कभी-कभी उसी दिन भी।
- भारत के राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (एनएसीपी) चरण 5 के साथ एचआईवी/एड्स के खिलाफ लड़ाई जारी है ।
- चरण 5 का लक्ष्य 2025 तक महत्वाकांक्षी लक्ष्य प्राप्त करना है:
    - वार्षिक नए एचआईवी संक्रमणों को 80% तक कम करें।
    - एड्स से संबंधित मृत्यु दर को 80% तक कम करें।
    - एचआईवी और सिफलिस के ऊर्ध्वाधर संचरण को समाप्त करें।

PatriotIAS

- सिफलिस एक यौन संचारित संक्रमण (एसटीआई) है जो ट्रेपोनेमा पैलिडम जीवाणु के कारण होता है। यह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ यौन संपर्क के माध्यम से फैल सकता है जिसे संक्रमण है, जिसमें योनि, गुदा या मौखिक सेक्स शामिल है।
- गर्भावस्था या प्रसव के दौरान गर्भवती व्यक्ति से उसके अजन्मे बच्चे में भी सिफलिस का संक्रमण हो सकता है।

- इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, NACP चरण 5 का लक्ष्य 2025 तक 95-95-95 लक्ष्य है :
  - एचआईवी से पीड़ित 95% लोगों को अपनी एचआईवी स्थिति पता होनी चाहिए।
  - एचआईवी संक्रमण से पीड़ित सभी लोगों में से 95% को निरंतर एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (एआरटी) प्राप्त होनी चाहिए।
  - एआरटी प्राप्त करने वाले सभी 95% लोगों को वायरल दमन हासिल करना चाहिए।
- एचआईवी/एड्स के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए निदान, उपचार और वायरल दमन दर में सुधार पर ध्यान केंद्रित करते हुए यूएनएड्स द्वारा निर्धारित वैश्विक लक्ष्यों के अनुरूप हैं ।

बाधाओं को पार करना

- एआरटी सुविधाओं में विलंबित नामांकन एक बड़ी चुनौती है, कई मरीज़ केवल तभी इलाज चाहते हैं जब उनकी सीडी4 गिनती 200 से कम हो।
- मरीज़ एआरटी पर बेहतर महसूस करना शुरू कर सकते हैं और फिर अपनी दवा लेना बंद कर सकते हैं , जिससे खुराक छूट जाती है और प्रतिरोध का विकास होता है।
- **दूरदराज के क्षेत्रों** सहित सभी क्षेत्रों में एआरटी दवाओं की निरंतर आपूर्ति और उपलब्धता सुनिश्चित करना , अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- उपचार तक पहुंच को व्यापक बनाने के लिए **पीएलएचआईवी देखभाल में निजी क्षेत्र की भागीदारी पर जोर देने की जरूरत है।**
- **स्वास्थ्य देखभाल कर्मचारियों के लिए निरंतर प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण** विकसित हो रहे वैज्ञानिक ज्ञान को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।
- **हेपेटाइटिस, मधुमेह** , उच्च रक्तचाप और मानसिक स्वास्थ्य जैसे अन्य स्वास्थ्य कार्यक्रमों के साथ एकीकरण आवश्यक है क्योंकि पीएलएचआईवी में अक्सर अन्य स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं।
- रोकथाम योग्य मृत्यु दर को कम करने के लिए एक केंद्रित दृष्टिकोण में व्यवस्थित मृत्यु समीक्षा और उन्नत निदान तक पहुंच शामिल होनी चाहिए।
- भारत की निःशुल्क एआरटी पहल की सफलता का श्रेय निम्नलिखित को जाता है:
  - राजनीतिक इच्छाशक्ति और क्रमिक सरकारों से लगातार समर्थन।
  - कार्यक्रम के लिए सतत और पर्याप्त धन।
  - प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए नियमित कार्यक्रम समीक्षा और क्षेत्र-आधारित निगरानी।
  - मुफ़्त एआरटी के साथ-साथ पूरक पहलों का कार्यान्वयन।
  - समुदायों और हितधारकों की भागीदारी और भागीदारी।
  - पीएलएचआईवी की जरूरतों को पूरा करने के लिए सेवा वितरण में जन-केंद्रित संशोधन।
  - कार्यान्वयन संबंधी कमियों के साथ नीतिगत इरादों को पाटने का प्रयास।
  - अधिक पीएलएचआईवी तक पहुंचने के लिए सेवाओं का निरंतर विस्तार।

- **निःशुल्क एआरटी पहल ने भारत में एचआईवी/एड्स महामारी को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।**
  - यह सभी को गुणवत्तापूर्ण, मुफ्त और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में सरकार द्वारा संचालित सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को प्रदर्शित करता है।

PatriotICAS

- यह देश में अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य पहलों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि और सबक प्रदान करता है।
- यह रोग उन्मूलन की दिशा में प्रगति में तेजी लाने के लिए राष्ट्रव्यापी मुफ्त हेपेटाइटिस सी उपचार जैसी समान पहल शुरू करने के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य कर सकता है।

मुख्य अभ्यास प्रश्न: GS PAPER II: स्वास्थ्य क्षेत्र

प्रश्न: भारत की निःशुल्क एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (एआरटी) पहल से सीखे गए सबक को देश के अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों पर कैसे लागू किया जा सकता है? (250 शब्द/15 अंक)

उत्तर दृष्टिकोण

भारत की निःशुल्क एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (एआरटी) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ अपना उत्तर प्रस्तुत करें।
फिर भारत की निःशुल्क एआरटी पहल के तहत उठाए गए कदमों को सामने लाएँ जिससे यह सफल हुआ।
आगे ऐसी अन्य बीमारियों पर चर्चा करें जहां ऐसे कदम उठाए जा सकते हैं।
तदनुसार निष्कर्ष निकालें।

उत्तर

1 अप्रैल 2004 को शुरू की गई भारत की निःशुल्क एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (एआरटी) पहल एचआईवी/एड्स महामारी के प्रति देश की प्रतिक्रिया में एक मील का पत्थर साबित हुई है। एचआईवी (पीएलएचआईवी) के साथ रहने वाले व्यक्तियों के लिए एंटीरेट्रोवायरल दवाओं तक मुफ्त पहुंच प्रदान करने वाली यह पहल न केवल एचआईवी/एड्स के प्रसार को रोकने में सफल रही है बल्कि मूल्यवान सबक भी प्रदान करती है जिसे देश में अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों पर लागू किया जा सकता है।

- **राजनीतिक इच्छाशक्ति और लगातार समर्थन** : भारत की मुफ्त एआरटी पहल की सफलता का श्रेय अटूट राजनीतिक इच्छाशक्ति और लगातार सरकारों के लगातार समर्थन को दिया जा सकता है। यह सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों की सफलता के लिए मजबूत राजनीतिक प्रतिबद्धता और निरंतर वित्त पोषण के महत्व पर प्रकाश डालता है।
- **लचीलापन और अनुकूलनशीलता** : एआरटी कार्यक्रम ने समय के साथ बदलती जरूरतों और परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलन करके लचीलेपन का प्रदर्शन किया। पात्रता मानदंडों में बदलाव और 'सभी का इलाज करें' दृष्टिकोण को अपनाना उभरती स्वास्थ्य चुनौतियों का जवाब देने में लचीलेपन के महत्व को दर्शाता है।
- **रोगी-केंद्रित दृष्टिकोण** : एआरटी कार्यक्रम में अपनाए गए रोगी-केंद्रित दृष्टिकोण, जैसे स्थिर पीएलएचआईवी को दो से तीन महीने की दवाएं प्रदान करना, रोगी के दौरे को कम करना और एआरटी केंद्रों पर भीड़ कम करना , उपचार के पालन में सुधार के लिए अन्य स्वास्थ्य कार्यक्रमों पर लागू किया जा सकता है और रोगी परिणाम.
- **अन्य स्वास्थ्य कार्यक्रमों के साथ एकीकरण** : तपेदिक, हेपेटाइटिस, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और मानसिक स्वास्थ्य जैसे अन्य स्वास्थ्य कार्यक्रमों के साथ एचआईवी/एड्स सेवाओं का एकीकरण महत्वपूर्ण है, क्योंकि पीएलएचआईवी में अक्सर अन्य स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं। यह एकीकृत दृष्टिकोण रोगियों के लिए व्यापक देखभाल और बेहतर स्वास्थ्य परिणाम सुनिश्चित करता है।
- **सामुदायिक सहभागिता और भागीदारी** : समुदायों और हितधारकों की सहभागिता और भागीदारी ने एआरटी कार्यक्रम की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **नियमित निगरानी और मूल्यांकन** : एआरटी कार्यक्रम की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने में नियमित कार्यक्रम समीक्षा और क्षेत्र-आधारित निगरानी महत्वपूर्ण थी।
- **सेवाओं का विस्तार** : सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों की सफलता के लिए अधिक लाभार्थियों तक पहुँचने के लिए सेवाओं का निरंतर विस्तार महत्वपूर्ण है। एआरटी कार्यक्रम का 10 से भी कम से लेकर

PathfinderIAS

लगभग 700 एआरटी केंद्रों तक विस्तार बढ़ती मांगों को पूरा करने और वंचित आबादी तक पहुंचने के लिए सेवाओं को बढ़ाने के महत्व को रेखांकित करता है।

ये पाठ विशिष्ट कार्यक्रमों पर लागू किए जा सकते हैं:

- **राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी):** एआरटी पहल की तरह, एनटीईपी निरंतर राजनीतिक प्रतिबद्धता और वित्त पोषण से लाभान्वित हो सकता है। उपचार प्रोटोकॉल में लचीलापन, सामुदायिक भागीदारी और नियमित निगरानी टीबी नियंत्रण प्रयासों को बढ़ा सकती है।
- राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनवीबीडीसीपी): एनवीबीडीसीपी के साथ एचआईवी/एड्स सेवाओं को एकीकृत करने से मलेरिया और डेंगू जैसी वेक्टर जनित बीमारियों की निगरानी और प्रतिक्रिया में सुधार हो सकता है। सामुदायिक सहभागिता और ग्रामीण क्षेत्रों में सेवाओं का विस्तार वेक्टर नियंत्रण उपायों को मजबूत कर सकता है।
- राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम (एनआईपी): एनआईपी दूरदराज के समुदायों के लिए आउटरीच शिविरों और घर-आधारित टीकाकरण सहित व्यापक टीकाकरण सेवाएं प्रदान करके रोगी-केंद्रित दृष्टिकोण अपना सकता है। एचआईवी परीक्षण और परामर्श सेवाओं के साथ एकीकरण कवरेज और शीघ्र निदान को बढ़ा सकता है।
- राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (एनएमएचपी): मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को एचआईवी/एड्स देखभाल के साथ एकीकृत करने से पीएलएचआईवी की मनोसामाजिक जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। समुदाय-आधारित सहायता समूह और परामर्श सेवाएँ मानसिक स्वास्थ्य परिणामों और उपचार पालन में सुधार कर सकती हैं।
- केंद्रों के साथ मधुमेह जांच और प्रबंधन सेवाओं के एकीकरण से पीएलएचआईवी के बीच मधुमेह का शीघ्र पता लगाने और उपचार में सुधार हो सकता है। मधुमेह की रोकथाम और जीवनशैली में संशोधन पर रोगी शिक्षा बेहतर स्वास्थ्य परिणामों को बढ़ावा दे सकती है।
- राष्ट्रीय वायरल हेपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम (एनवीएचसीपी): एआरटी कार्यक्रम के समान, एनवीएचसीपी हेपेटाइटिस बी और सी के शीघ्र निदान और उपचार को प्राथमिकता दे सकता है। सामुदायिक आउटरीच, नियमित निगरानी और देखभाल से जुड़ाव हेपेटाइटिस नियंत्रण प्रयासों की प्रभावशीलता को बढ़ा सकता है।
- कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग और स्ट्रोक की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीसीडीसीएस): एनपीसीडीसीएस के साथ एचआईवी परीक्षण और परामर्श सेवाओं को एकीकृत करने से पीएलएचआईवी के बीच गैर-संचारी रोगों का शीघ्र पता लगाने और प्रबंधन की सुविधा मिल सकती है। समुदाय-आधारित स्क्रीनिंग कार्यक्रम और जीवनशैली में हस्तक्षेप पुरानी बीमारियों के बोझ को कम कर सकते हैं।

इस प्रकार, राजनीतिक प्रतिबद्धता, लचीलेपन, रोगी-केंद्रित दृष्टिकोण, अन्य स्वास्थ्य सेवाओं के साथ एकीकरण, सामुदायिक जुड़ाव, नियमित निगरानी और सेवाओं के विस्तार पर जोर देकर, भारत अपनी समग्र सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया को मजबूत कर सकता है और अपने सभी नागरिकों के लिए स्वास्थ्य परिणामों में सुधार कर सकता है।

दुर्भावनापूर्ण और गलतफहमियाँ: कांग्रेस और भारतीय गुट पर

पुरानी मंडल राजनीति पर कांग्रेस की निर्भरता ने भारत के लिए परेशानी खड़ी कर दी है

- भारतीय राजनीति को वर्तमान में " भारतीय जनता पार्टी-प्रभुत्व वाली राजनीतिक पार्टी प्रणाली " की विशेषता है, जहां भाजपा अधिकांश राज्यों में प्रभावी रूप से प्रतिस्पर्धा करती है ।
- कांग्रेस, एक अन्य प्रमुख राष्ट्रीय पार्टी है, जिसकी राष्ट्रव्यापी उपस्थिति है लेकिन कई राज्यों में उसे महत्वपूर्ण कमजोरियों का सामना करना पड़ रहा है। इसका लक्ष्य राज्य-वार गठबंधनों के माध्यम से इन कमजोरियों को दूर करना है।
- ये गठबंधन, जिनमें क्षेत्रीय दल शामिल हैं, भाजपा का मुकाबला करने के लिए बनाए गए हैं, जिससे अकेले निपटना कठिन हो गया है।
- "इंडिया ब्लॉक", जिसमें कांग्रेस, क्षेत्रीय दल और वामपंथी शामिल हैं, भाजपा के खिलाफ एकता की आवश्यकता के आधार पर चुनिंदा राज्य-वार गठबंधन बनाते हैं।
- यह गतिशीलता विशेष रूप से महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में स्पष्ट है, जहां भाजपा ने चुनावों में उच्च सफलता दर देखी है।
- बिहार में , राजद, कांग्रेस और वाम दलों से बना " महागठबंधन " गठबंधन , भाजपा के नेतृत्व वाले सत्तारूढ़ गठबंधन को चुनौती देने के करीब आ गया है।
- बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बदलते गठबंधनों के कारण गठबंधन को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है , जिससे इसका समर्थन आधार प्रभावित हो रहा है।
- **जबकि कांग्रेस ने मंडल पार्टियों के साथ गठबंधन किया है और सामाजिक न्याय पर जोर दिया है, उसे अतीत की जाति-आधारित राजनीति की नकल करने से बचना चाहिए।**

जटिल संकट: ग्रीष्मकाल में जल संकट के प्रभाव पर (GS PAPER III: आपदा प्रबंधन)

पानी की कमी गरीबों के लिए अन्य प्रतिकूल घटनाओं को बढ़ा देती है

- दक्षिण भारत के जलाशय वर्तमान में **अपनी धारण क्षमता का केवल 23% ही भरे हैं, जो रोलिंग दशकीय औसत से नौ प्रतिशत अंक कम है** ।

केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी)

- **शीर्ष तकनीकी संगठन:** सीडब्ल्यूसी जल संसाधन के क्षेत्र में भारत की प्रमुख तकनीकी संस्था है।
- **कामकाज:** यह जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के तहत संचालित होता है।
- **अधिदेश:** भारत के जल संसाधनों के समग्र विकास और प्रबंधन के लिए तकनीकी मार्गदर्शन, सहायता और समन्वय प्रदान करना।

सीडब्ल्यूसी द्वारा प्रदान किया गया डेटा और सेवाएँ

1. **हाइड्रोलॉजिकल ऑब्जर्वेशन नेटवर्क**
    - **व्यापक नेटवर्क:** सीडब्ल्यूसी डेटा एकत्र करने के लिए देश भर में हाइड्रोलॉजिकल अवलोकन स्टेशनों का एक विशाल नेटवर्क रखता है:
        - नदी जल स्तर
        - नदी का प्रवाह/निर्वहन
        - भूजल स्तर
        - पानी की गुणवत्ता (चुनिंदा स्थानों पर)
        - जलाशयों का अवसादन
2. **बाढ़ का पूर्वानुमान:**

ParijatIAS

- **चेतावनियाँ जारी करना:** सीडब्ल्यूसी भारत में प्रमुख नदी घाटियों के लिए बाढ़ के पूर्वानुमान और चेतावनियाँ जारी करने के लिए डेटा का विश्लेषण करती है , जिससे आपदा तैयारियों में सहायता मिलती है।

3. **जल संसाधन आकलन**
    - **उपलब्धता और उपयोग:** सीडब्ल्यूसी विभिन्न क्षेत्रों में सतही जल और भूजल की उपलब्धता और उनके वर्तमान उपयोग पैटर्न पर अध्ययन और अनुमान आयोजित करता है।
4. **डेटा प्रसार**
    - **जल सूचना प्रणाली:** सीडब्ल्यूसी एकत्र किए गए डेटा की एक बड़ी मात्रा को विभिन्न प्लेटफार्मों के माध्यम से जनता, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध कराता है:
        - **जल वर्ष पुस्तकें:** जल विज्ञान संबंधी आंकड़ों का व्यापक संकलन।
        - **ऑनलाइन पोर्टल और डेटाबेस:** विशिष्ट डेटासेट तक आसान पहुंच।

- कई कारणों से आसन्न जल संकट गंभीर होने की आशंका है:
    - **अल नीनो घटनाओं** का प्रभाव , वर्तमान में दर्ज इतिहास की पांच सबसे मजबूत घटनाओं में से एक है, जिससे मानसून और अधिक अनियमित हो गया है।
    - मौसम विज्ञानियों ने तापमान में गिरावट की भविष्यवाणी की है, **2023 रिकॉर्ड पर सबसे गर्म वर्ष होगा और 93% संभावना है कि 2026 तक हर साल नए रिकॉर्ड स्थापित होंगे** ।
    - भारत में आगामी आम चुनाव के दौरान बाहरी गतिविधियों में वृद्धि से पानी की मांग में वृद्धि होगी।
        - पिछले संकटों के बावजूद, **जमीनी स्तर पर तैयारी और नीति कार्यान्वयन अपर्याप्त है, जो शहरी विकास, भूजल के अत्यधिक दोहन और कम पानी के पुन: उपयोग दक्षता जैसे कारकों से जुड़ा हुआ है।**
    - **जलवायु परिवर्तन बदतर हो गया है** सूखे और बीमारी के प्रकोप जैसे एक साथ संकटों की संभावना को बढ़ाकर स्थिति, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों को प्रभावित करना ।
    - पुनरावृत्ति **अंतर्निहित मुद्दों को संबोधित करने और बदलते जलवायु पैटर्न के अनुकूल ढलने में सरकारों की विफलता को उजागर करती है** ।
    - नीति निर्माताओं के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि भविष्य के संकट केवल पानी की कमी के बारे में नहीं होंगे, बल्कि जलवायु परिवर्तन से प्रभावित सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ भी होंगी।

केरल में वित्त आयोग और सार्वजनिक वित्त

असममित राजकोषीय नियमों के लिए व्यापक चर्चा और बहस की आवश्यकता है, जैसा कि केरल ने रेखांकित किया है

- सोलहवें केंद्रीय वित्त आयोग के गठन के कारण केंद्र-राज्य वित्तीय संबंधों में सार्वजनिक ऋण प्रबंधन ने ध्यान आकर्षित किया है।
- केरल ने राज्यों के लिए शुद्ध उधार सीमा पर केंद्र के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा दायर किया, जिससे घाटे और ऋण के संबंध में "असममित राजकोषीय नियमों" पर बहस छिड़ गई।
- कोविड-19 के बाद की राजकोषीय रणनीतियों में ऋण-घाटे की गतिशीलता महत्वपूर्ण है, राज्यों का लक्ष्य राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में 3.5% करना है, जो बिजली क्षेत्र में सुधारों से जुड़ा है, और सामान्य सरकारी ऋण को सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में 60% तक सीमित किया गया है।

ParchamIAS

- केरल की बकाया देनदारियां जीएसडीपी का 36.9% हैं, 2025 तक परिपक्व होने वाले एक महत्वपूर्ण हिस्से के कारण न्यूनतम रोल-ओवर जोखिम है। तेलंगाना में ऋण परिपक्वता प्रोफ़ाइल लंबी है, जिसमें प्रमुख पुनर्वित्त 2063 तक देय नहीं है।
- सार्वजनिक व्यय डिज़ाइन के लिए राजस्व स्थिरता महत्वपूर्ण है, केरल स्वयं के कर राजस्व (कुल राजस्व का 48%) और स्वयं के गैर-कर राजस्व (लॉटरी सहित 12%) पर निर्भर है।
- भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG) ने नवंबर 2023 में कर राजस्व के लिए केरल के राजकोषीय अंकगणित अनुपात 57.23% के साथ राजकोषीय अनुमान और वास्तविक आंकड़ों का खुलासा किया। जीएसटी राजकोषीय अंकगणित पिछले वर्ष की तुलना में बढ़कर 56.30% हो गया।

अस्थिरता चिंता का विषय है

- केरल सरकार अंतर-सरकारी राजकोषीय हस्तांतरण में अस्थिरता को लेकर चिंतित है, विशेष रूप से केरल सहित कुछ राज्यों के लिए केंद्रीय वित्त आयोग कर हस्तांतरण की घटती हिस्सेदारी को लेकर।
- वित्त आयोग के हस्तांतरण में केरल की हिस्सेदारी तेरहवें वित्त आयोग में 2.341% से घटकर पंद्रहवें वित्त आयोग में 1.925% हो गई।
- पंद्रहवें वित्त आयोग द्वारा कर हस्तांतरण फॉर्मूला जनसंख्या (15%), क्षेत्र (15%), आय दूरी (45%), जनसांख्यिकीय संक्रमण (12.5%), वन और पारिस्थितिकी (10%), और कर प्रयास (2.5%) पर विचार करता है।).
- आय की दूरी को दिया गया महत्व केरल जैसे विकासशील राज्यों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, जिससे राजकोषीय हस्तांतरण के इक्विटी बनाम दक्षता सिद्धांतों पर बहस छिड़ जाती है।
- कर प्रयासों को बढ़ाने और राजकोषीय हस्तांतरण के बारे में चिंताओं को दूर करने के लिए सार्वजनिक वित्त में डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत करना महत्वपूर्ण है।
- उच्च सार्वजनिक ऋण को भौतिक, डिजिटल और सामाजिक बुनियादी ढांचे में बढ़े हुए निवेश से जोड़ा जाना चाहिए।
- युद्ध या आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान जैसे संकटों के दौरान खाद्य सुरक्षा उपायों की निरंतरता सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है, राजकोषीय नीति मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में भूमिका निभाती है।

आगे देख रहा

- सतत आर्थिक विकास के लिए हरित, लचीली और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में निवेश करना महत्वपूर्ण है।
- राज्य को जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए उचित बजट आवंटन के साथ "राज्य अनुकूलन संचार" की आवश्यकता है।
- जनसांख्यिकीय परिवर्तन और प्रवासन जैसे कारकों पर विचार करते हुए, राज्य में उचित वित्तीय हस्तांतरण सुनिश्चित करने के लिए वित्त आयोग के साथ बातचीत करना महत्वपूर्ण है।
- जलवायु परिवर्तन और प्रवासन जैसे राज्य-विशिष्ट मुद्दों से निपटने के लिए विशिष्ट-उद्देश्यीय हस्तांतरण की आवश्यकता है।
- श्रम बल भागीदारी बढ़ाने के लिए देखभाल अर्थव्यवस्था के बुनियादी ढांचे में निवेश सहित लैंगिक बजटिंग आवश्यक है।
- मतदाताओं के बीच विश्वास बनाए रखने के लिए बजट की विश्वसनीयता महत्वपूर्ण है, खासकर चुनाव से पहले।
- वित्तीय नियोजन और मतदाता विश्वास बनाए रखने के लिए राजकोषीय निशानेबाजी, या राजकोषीय अनुमानों की सटीकता महत्वपूर्ण है।

PatriotIAS

- व्यय कटौती जैसे राजकोषीय मितव्ययिता उपाय मानव पूंजी निर्माण को नुकसान पहुंचा सकते हैं और आर्थिक विकास सुधार में बाधा डाल सकते हैं, जिससे वे वर्तमान में राज्य के लिए अनुपयुक्त विकल्प बन सकते हैं।

श्रमिक, तकनीकी नहीं, राज्य की प्राथमिकता होनी चाहिए (GS PAPER II: सरकारी योजना (GS PAPER III: एस एंड टी का उपयोग)

एमजीएनआरईजीएस का उद्देश्य तकनीकी हस्तक्षेप के लिए एक खेल का मैदान प्रदान करना नहीं है, बल्कि डिजिटल प्रौद्योगिकी द्वारा वंचित परिवारों को कार्य सुरक्षा की भावना प्रदान करना है।

- आधार -**आधारित भुगतान प्रणाली (एबीपीएस)** इससे जुड़े विभिन्न मुद्दों के कारण इस पर काफी ध्यान दिया जा रहा है।
- एबीपीएस विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (एमजीएनआरईजीएस) से जुड़ा हुआ है** , जो ग्रामीण परिवारों को 100 दिनों की गारंटीकृत मजदूरी रोजगार प्रदान करता है।
- मनरेगा के लिए बढ़े हुए बजटीय आवंटन के बावजूद, ग्रामीण रोजगार गारंटी को डिजिटलीकृत पहचान प्रणालियों से जोड़ने में चुनौतियाँ बनी हुई हैं।
- चुनौतियों में शामिल हैं:
    1. इंटरनेट कनेक्टिविटी समस्याएँ.
    2. फ़िंगरप्रिंट पहचान में समस्याएँ.
    3. विकलांग व्यक्तियों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयाँ।
    4. अलिखित कार्य दिवस.
    5. नाम दोहराव और विसंगतियाँ।
    6. लाभार्थियों में जागरूकता की कमी.
    7. नामों को जोड़ने, प्रमाणीकरण और हटाने में त्रुटियाँ।
    8. सीडिंग मुद्दे, विशेषकर जहां श्रमिकों की कोई गलती नहीं है।
- शोध से पता चलता है कि **26 करोड़ से अधिक श्रमिक मनरेगा के साथ पंजीकृत हैं, 2022-23 में 5.2 करोड़ श्रमिकों को डेटाबेस से हटा दिया गया है** ।
- एक महत्वपूर्ण हिस्सा (34.8%) एबीपीएस के लिए अयोग्य है।
- आलोचक भुगतान प्रणाली में कई खामियों को उजागर करते हैं, जिससे नामांकित व्यक्तियों के लिए सुचारू रूप से भुगतान प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

लाभार्थियों को दरकिनार करना

- एमजीएनआरईजीएस जैसी योजनाओं में श्रमिक **प्रौद्योगिकी पर बहुत अधिक निर्भर हैं** , जो प्रौद्योगिकी से उन्हें लाभ पहुंचाने के विचार का खंडन करता है।
- रोजगार **सुरक्षा पीछे चली जाती है** , श्रमिकों को लाभार्थियों के बजाय तकनीकी प्रणाली के घटकों के रूप में अधिक माना जाता है।

PatriotiCAS

- डिजाइन **और कार्यान्वयन श्रमिकों के कल्याण पर प्रौद्योगिकी को प्राथमिकता देता है।**
- प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित करने से सरकारी प्रक्रियाओं में जटिलता और सुस्ती आ गई है, अब डिजिटल संदर्भ में।
- चिंता यह है कि राज्य श्रमिकों को सशक्त बनाने के बजाय अपने लिए प्रौद्योगिकी को प्राथमिकता देता है।
- एमजीएनआरईजीएस जैसी रोजगार गारंटी योजनाओं का प्राथमिक लक्ष्य डिजिटल तकनीक द्वारा वंचित परिवारों को सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना होना चाहिए।
- **इन योजनाओं का उद्देश्य समावेशन को बढ़ावा देना, असमानता को कम करना और सामाजिक-आर्थिक संकट को कम करना है, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्पादक और न्यायसंगत समाज में योगदानकर्ताओं के रूप में मान्यता दी गई है।**
- तकनीकी समाधानों को इन योजनाओं के मूल उद्देश्यों पर हावी नहीं होना चाहिए, जिन्होंने **बेहतर पोषण, लैंगिक समानता, सामाजिक बीमा और राजनीतिक पारदर्शिता जैसे लाभों का प्रदर्शन किया है।**
- कोविड-19 महामारी के सबक वंचित समुदायों के लिए प्रौद्योगिकी पर बहुत अधिक निर्भर होने के जोखिमों को उजागर करते हैं।

प्रौद्योगिकी की क्षमता

- प्रौद्योगिकी ने ऐतिहासिक रूप से प्रगतिशील सिद्धांतों का समर्थन करने की क्षमता दिखाई है और यह सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने के लिए केंद्रीय है।
- **भारत में ग्रामीण रोजगार गारंटी योजनाएं, जैसे कि मनरेगा, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से एसडीजी में योगदान करती हैं** ।
- मौजूदा तकनीकी मुद्दों के समाधान के लिए एमजीएनआरईजीएस को आवंटित महत्वपूर्ण बजट का उपयोग प्रौद्योगिकी-मुक्त प्रणाली के माध्यम से किया जाना चाहिए।
- **तकनीकी और गैर-तकनीकी दोनों समाधान** मुद्दों को सुधारने के लिए विश्लेषण किया गया है , लेकिन राज्य के तकनीकी दृष्टिकोण में मूलभूत परिवर्तन की भी आवश्यकता है।
- राज्य को विकास लक्ष्यों में एक सक्रिय भागीदार के रूप में कार्यकर्ता को प्राथमिकता देनी चाहिए और तकनीकी प्रगति के साथ-साथ देश-विशिष्ट चिंताओं का समाधान करना चाहिए।
- हालाँकि प्रौद्योगिकी फायदेमंद हो सकती है, खासकर सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों से निपटने में, इसे **श्रमिकों के कल्याण और सुरक्षा से अधिक महत्व नहीं दिया जाना चाहिए।**
- बढ़ती असमानता, कार्य अनिश्चितता और ग्रामीण संकट के बीच श्रमिकों के लिए आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने पर प्राथमिक ध्यान हमेशा होना चाहिए।

वे वर्ष जब दो प्रमुख द्रविड़ खिलाड़ी तमिलनाडु के प्रमुख खिलाड़ी बने

अक्टूबर 1972 में, DMK के कोषाध्यक्ष और अभिनेता एमजी रामचंद्रन ने AIADMK की स्थापना के लिए पार्टी से नाता तोड़ लिया। राजाजी (1972) और कामराज (1975) दोनों का निधन हो गया, जिससे राजनीतिक क्षेत्र करुणानिधि और एमजीआर के बीच सीधी लड़ाई का मैदान बन गया।

- 1967 के बाद की अवधि तमिलनाडु के लिए दो प्रमुख द्रविड़ पार्टियों के उद्भव के कारण महत्वपूर्ण थी: द्रविड़ मुनेत्र कज़गम (डीएमके) और अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कज़गम (AIADMK).

- इन पार्टियों ने 1977 से तमिलनाडु के राजनीतिक परिदृश्य पर अपना दबदबा बनाए रखा है और खुद को राज्य की राजनीति में प्राथमिक खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया है।
- 1967 में विधानसभा चुनावों के साथ-साथ हुए लोकसभा चुनावों में, डीएमके के नेतृत्व वाले संयुक्त मोर्चा (यूएफ), जिसमें स्वतंत्र, सीपीआई (एम) और मुस्लिम लीग शामिल थे, ने सत्तारूढ़ कांग्रेस को चुनौती दी।
- DMK के संस्थापक सीएन अन्नादुरई ने DMK और मोर्चे का नेतृत्व करने के बावजूद, दक्षिण मद्रास लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने का फैसला किया। वह जीते लेकिन तमिलनाडु के पहले गैर-कांग्रेसी मुख्यमंत्री बनने के लिए सांसद पद से इस्तीफा दे दिया।
- लोकसभा चुनाव में, यूएफ ने 35 सीटें जीतीं, जिसमें डीएमके को 25, स्वतंत्र को छह और सीपीआई (एम) को चार सीटें मिलीं। कांग्रेस केवल तीन सीटें ही जीत पाई।
- रिक्विजिशनिस्ट) और कांग्रेस (संगठन) का गठन हुआ । इससे तमिलनाडु में राजनीतिक समीकरण बदल गए।
- विभाजन के बाद द्रमुक ने कांग्रेस (आर) के साथ गठबंधन किया और अन्नादुरई की मृत्यु के बाद 1969 की शुरुआत में एम. करुणानिधि मुख्यमंत्री बने।
- इन राजनीतिक घटनाक्रमों के बीच, मार्च 1971 में स्नैप पोल आयोजित किये गये।
- 1971 के चुनावों में, DMK ने तमिलनाडु में 23 निर्वाचन क्षेत्र जीते, जिसमें कांग्रेस (R) ने नौ सीटें जीतीं, और CPI ने चार सीटें हासिल कीं।
- डीएमके के एमएस शिवसामी ने तिरुचेंदुर लोकसभा क्षेत्र से स्वतंत्र के एम. मथियास के खिलाफ 26 वोटों के मामूली अंतर से जीत हासिल की।
- विशेष रूप से, लंबे समय से प्रतिद्वंद्वी रहे कामराज और सी. राजगोपालाचारी अपनी पार्टियों क्रमशः कांग्रेस (ओ) और स्वतंत्र के साथ मिलकर संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी (एसएसपी) के साथ चुनाव लड़ रहे हैं। कामराज ने नागरकोइल सीट जीती.
- बाद के वर्षों में महत्वपूर्ण घटनाएँ देखी गईं, जिनमें अक्टूबर 1972 में DMK में नाटकीय विभाजन भी शामिल था, जिसके परिणामस्वरूप एमजी रामचन्द्रन (MGR) द्वारा AIADMK का गठन हुआ।
- 1972 में राजाजी और 1975 में कामराज के निधन से राजनीतिक क्षेत्र में मुख्य रूप से करुणानिधि और एमजीआर के बीच मुकाबला हो गया।
- डिंडीगुल लोकसभा उपचुनाव जीतकर चुनावी प्रगति की ।
- आपातकाल के वर्षों के दौरान, DMK कांग्रेस की कट्टर आलोचक बन गई। जनवरी 1976 में, करुणानिधि के नेतृत्व वाली द्रमुक सरकार को बर्खास्त कर दिया गया और राज्य विधानसभा भंग कर दी गई।
- मूपनार के नेतृत्व में कांग्रेस (ओ) के एक धड़े का इंदिरा गांधी की कांग्रेस में विलय हो गया।
- 1977 के लोकसभा चुनावों में, अन्नाद्रमुक और कांग्रेस ने गठबंधन बनाया, जबकि जनता पार्टी एक महत्वपूर्ण विपक्ष के रूप में उभरी, जिसके उम्मीदवारों को तमिलनाडु में कांग्रेस (ओ) के प्रतीक के तहत मैदान में उतारा गया।
- सीपीआई के साथ एआईएडीएमके-कांग्रेस गठबंधन ने 35 सीटें जीतीं, सी. सुब्रमण्यम और आर. वेंकटरमण ने क्रमशः पोलाची और दक्षिण मद्रास से जीत हासिल की। कांग्रेस (ओ) ने तीन सीटें जीतीं और डीएमके ने एक सीट जीती, जबकि सीपीआई (एम) कांग्रेस (ओ) और डीएमके के साथ गठबंधन करने के बावजूद कोई भी सीट सुरक्षित करने में विफल रही।

Patriotic IAS